तीन सिद्धाँत

संकलन

इमाम मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब रहमतुल्लाह अलैह

अनुक्रम एवं संपादन और रूपांकन

तीन सिद्धाँत संकलन

इमाम मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब रहमतुल्लाह अलैह

जान लें – अल्लाह ता'आला आप पर दया करे – के हम पर चार विषयों का जानना ज़रूरी है :

पहला विषय : ज्ञान प्राप्त करना – इसका मतलब अल्लाह ता'आला की, उसके नबी सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम की और दीन ए इस्लाम के दलाइल की रौशनी में ज्ञान रखना |

दूसरा विषय : उससे प्राप्त किये हुए ज्ञान पर कार्य/काम करना |

तीसरा विषय : उस ज्ञान की ओर लोगों को निमंत्रण देना ।

चौथा विषय : यदि उस मार्ग में कोई बाधा हो, तब उस पर सहनशीलता करना ।

हमारी इस बात की दलील अल्लाह ता'आला का ये फरमान है – शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यंत दयावान है :

﴿وَالْعَصْرِ*إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِي خُسْرٍ * إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ﴾

इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया के : " यदि अल्लाह ता'आला अपने मख्लूख पर इस सूरः के अतिरिक्त कुछ और बहस या दलील नाज़िल नहीं करता, तब भी यह एक सूरः इन के लिए पर्याप्त हो गया होता ।

इमाम बुखारी रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया के : "कहने और करने से पहले ज्ञान प्राप्त करना चाहिए" इसकी दलील में अल्लाह ता'आला का फरमान है :"

[47:19] ﴿فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلَه إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ﴾

[सूरः मुहम्मद : 19] अल्लाह ता'आला ने इस आयात में कहने और करने से पहले ज्ञान प्राप्त करने का आदेश दिया है।"

जान लें - अल्लाह ता'आला तुम पर दया करे - हर मुसलमान पुरुष और स्त्री पर इन तीन बातों का जानना,और इन पर कार्य करना आवश्यक है :

पहला सिद्धाँत : इस बात का ज्ञान रखें के अल्लाह ता'आला ने हमे पैदा किया है, और वही हमें जीविका देता है, उसने हमें ऐसे

ही मार्गदर्शन के बिना नहीं छोड़ा है, बल्कि हमारे पास अपने रसूल भेजा, अब जो उस रसूल की आज्ञाकारिता एवं आज्ञापालन करेगा, वह जन्नत में जायेगा, और जो उसकी आज्ञा का पालन नहीं करेगा, वह जहन्नुम में जायेगा ।

इसकी दलील अल्लाह ता'आला का यह फरमान है "

﴿إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولاً شَاهِداً عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَى فِرْعَوْنَ رَسُولاًفَعَصَى فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخْذاً وَبِيلاً﴾ [73:15-16]

दूसरा सिद्धाँत: यह जानना आवश्यक है के अल्लाह ता'आला इस बात से नाराज़ होते हैं के उसके साथ किसी को भी, चाहे वह कोई चुनिंदा फरिश्ता या भेजा हुवा रसूल क्यों ना हो , उसकी प्रार्थना में शामिल किया जाये ।

इसकी दलील अल्लाह ता'आला का यह फरमान है

[72:18] ﴿وَأَنَّ الْمَسَاجِدَ لِلَّهِ فَلا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا﴾

तीसरा सिद्धाँत: इस बात का इल्म रखना आवश्यक है के जो व्यक्ति रसूल की आज्ञाकारिता करता है, और अल्लाह ता'आला को एक प्रभु समझता है, उसके लिए यह वैध नहीं है

के वह अल्लाह और उसके रसूल के साथ दुश्मनी रखने वालों के साथ दोस्ती करे, चाहे यह दुश्मन उसका कोई निकट से निकतम सम्बन्धी ही क्यों ना हो, **इसकी दलील अल्लाह ता'आला का यह फरमान है**

﴿لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ أُولَٰئِكَ كَتَبَ فِي

قُلُوبِهِمُ ٱلْإِيمَٰنَ وَأَيَّدَهُم بِرُوحٍ مِّنْهُ ۖ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّٰتٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَٰرُ خَٰلِدِينَ فِيهَا ۚ رَضِىَ
ٱللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا۟ عَنْهُ ۚ أُو۟لَٰٓئِكَ حِزْبُ ٱللَّهِ ۚ أَلَآ إِنَّ حِزْبَ ٱللَّهِ هُمُ ٱلْمُفْلِحُونَ ﴿٢٢﴾

[58:22]

जान लें: अल्लाह ता'आला आपको अपनी आज्ञाकारिता का मार्गदर्शन प्रदान करे - के हज़रत इब्राहिम अलैहिस्सलाम के दीन ए हनीफ़ का मतलब यह है कि आप दीन को शुद्ध रखते हुए एक अल्लाह कि प्रार्थना करें- अल्लाह ता'आला ने तमाम मख्लूख को इस प्रार्थना का निर्देश दिया है , और इसी के लिए सब को पैदा किया है, **जैसा के अल्लाह ता'आला का इरशाद है के :**

﴿وَمَا خَلَقْتُ الجِنَّ وَالإِنْسَ إِلاَّ لِيَعْبُدُونِ﴾ [٥١ : ٥٦]

य'अबुदून का मतलब यह है के वह लोग एक ईश्वरवाद का पालन करने वाले है|

और अल्लाह ता'आला ने जो सब से बड़ी सर्वश्रेष्ठ चीज़ का आदेश दिया है, वह चीज़ एक ईश्वरवाद है, जिसका मतलब यह होता है के सिर्फ एक अल्लाह कि प्रार्थना की जाए, और अल्लाह ता'आला ने जो सबसे बड़ी बुरी चीज़ से मना किया है, वह चीज़ शिर्क है| जिसका अर्थ यह होता है कि अल्लाह ता'आला के साथ किसी और को उसका साथी ठहराया जाए |

इसकी दलील अल्लाह ता'आला का यह फरमान है:

﴿وَاعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا﴾ [4:36]

जब आप से कोई यह प्रश्न करे के वह कौन से तीन सिद्धाँत है, जिनकी पहचान प्राप्त करना मनुष्य के लिए आवश्यक है ?

तब आप यह उत्तर दें: मनुष्य का अपने परवरदिगार की पहचान, अपने दीन की पहचान और अपने नबी मुहम्मद सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम की पहचान प्राप्त करना है ।

पहला सिद्धाँत

जब आप से कोई यह प्रश्न करे के: आप का परवरदिगार कौन है?

तब आप यह उत्तर दें: मेरा परवरदिगार वह अल्लाह है, जिस ने अपने उपहार से मेरे और सारे जहानों का पोषण किया है और वही मेरा प्रभु है, इसके अतिरिक्त मेरा कोई और प्रभु नहीं है ।

इसकी दलील अल्लाह ता'आला का यह फरमान है:

[1:2] ﴿الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ﴾

अल्लाह ता'आला के अतिरिक्त जितनी भी चीज़ें हैं, वह सब दुनिया की गिनती में आती है, और मैं भी इस दुनिया का एक व्यक्ति हूँ ।

जब आप से कोई यह प्रश्न करे के: आप ने अपने परवरदिगार की पहचान कैसे प्राप्त की है ?

तब आप यह उत्तर दें के उसके लक्षणों और उसके बनाये हुए जीवों से, और उसके लक्षणों में यह दिन और रात है, यह चाँद और सूरजा है, और उसके जीवों में से यह सात आसमान और सात ज़मीन और इनके बीच रहने वाली सारी चीज़ें हैं । **इसकी दलील अल्लाह ता'आला का यह फरमान है:**

﴿وَمِنْ آيَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ لَاتَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ﴾

[41:37]

और अल्लाह ता'आला का यह फरमान है:

﴿ إِنَّ رَبَّكُمُ ٱللَّهُ ٱلَّذِى خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضَ فِى سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ ٱسْتَوَىٰ عَلَى ٱلْعَرْشِ يُغْشِى ٱلَّيْلَ ٱلنَّهَارَ
يَطْلُبُهُۥ حَثِيثًا وَٱلشَّمْسَ وَٱلْقَمَرَ وَٱلنُّجُومَ مُسَخَّرَٰتٍۭ بِأَمْرِهِۦٓ ۗ أَلَا لَهُ ٱلْخَلْقُ وَٱلْأَمْرُ ۗ تَبَارَكَ ٱللَّهُ رَبُّ
ٱلْعَٰلَمِينَ ﴿٥٤﴾ ﴾

[7:54]

और रब [परवरदिगार] को कहते हैं, **इसकी दलील अल्लाह ता'आला का यह फरमान है:**

﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّاسُ ٱعْبُدُوا۟ رَبَّكُمُ ٱلَّذِى خَلَقَكُمْ وَٱلَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٢١﴾ ٱلَّذِى جَعَلَ لَكُمُ
ٱلْأَرْضَ فِرَٰشًا وَٱلسَّمَآءَ بِنَآءً وَأَنزَلَ مِنَ ٱلسَّمَآءِ مَآءً فَأَخْرَجَ بِهِۦ مِنَ ٱلثَّمَرَٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۖ فَلَا تَجْعَلُوا۟ لِلَّهِ
أَندَادًا وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٢﴾ ﴾

[2 : 21-22]

इमाम इब्न कसीर रहमतुल्लाह अलैह ने कहा के :" इन सारी चीज़ों को पैदा करने वाला ही प्रार्थना के योग्य है" ।

वह प्रार्थनायें जिनके करने का अल्लाह ता'आला ने आदेश दिया है, जैसे इस्लाम

(अपने आपको अल्लाह् ता'आला को सौंपदेना और उसकी आज्ञनाकारिता) लाना, ईमान (सच्चा विश्वास) लाना, एहसान (पूजा की पूर्णता) करना, दुआ करना, अल्लाह् का डर रखना, उससे आशा लगाये रखना, उस पर विश्वास करना, उसके उपहारों का उत्सुकता से इच्छा रखना, उसका खौफ अपने दिल में रखना, श्रद्धा और विश्वास रखना, अल्लाह् ता'अल्ला का डर रखना, अल्लाह् ता'आला से दिल लगाये रखना, उसी से सहायता माँगना, उसकी शरण माँगना, उसकी सहायता और जीत की माँग करना, उसके नाम पर जुबह् करना, उसी के लिए नज़र और नियाज़ करना, और इनके अतिरिक्त अन्य कई प्रार्थना हैं, जिनके करने का अल्लाह् ता'आला ने आदेश दिया है, यह सारी इबादातें सिर्फ अल्लाह् ता'आला के लिए ही हैं ।

इसकी दलील अल्लाह ता'आला का यह फरमान है:

[72:18] ﴿وَأَنَّ الْمَسَاجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا﴾

जिस व्यक्ति ने भी इन प्रार्थना में से एक भी प्रार्थना को अल्लाह ता'आला के अतिरिक किसी और के लिए अंकित किया, तो वह व्यक्ति अल्लाह ता'ला के साथ शिर्क करने वाला काफ़िर है ।

इसकी दलील अल्लाह ता'आला का यह फरमान है:

[23:117] ﴿وَمَن يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِندَ رَبِّهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ﴾

और हदीस पाक में आया है के : " दुआ प्रार्थना का सारांश है " ।

इसकी दलील अल्लाह ता'आला का यह फरमान है:

﴿وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ﴾ [40:60]

अल्लाह ता'आला से खौफ रखने की दलील अल्लाह ता'आला का यह फरमान है:

﴿إِنَّمَا ذَلِكُمُ الشَّيْطَانُ يُخَوِّفُ أَوْلِيَاءَهُ فَلا تَخَافُوهُمْ وَخَافُونِ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ﴾ [3:175]

अल्लाह ता'आला से उम्मीद बाँधे रखने की दलील में क़ुरआन करीम की यह आयत है:

﴿فَمَن كَانَ يَرْجُو لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا﴾ [18:110]

अल्लाह ता'आला पर विश्वास और भरोसा रखने की दलील अल्लाह ता'आला का यह फरमान है :

[5:23] ﴿وَعَلَى اللَّهِ فَتَوَكَّلُوا إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ﴾

अल्लाह ता'आला का यह भी फरमान है के :

[65:3] ﴿وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ﴾

अल्लाह ता'आला के उपहार में रुचि,और उसमें श्रद्धा और विश्वास रखने की दलील कुरआन करीम की यह आयत है:

[21:90] ﴿إِنَّهُمْ كَانُوا يُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَيَدْعُونَنَا رَغَبًا وَرَهَبًا وَكَانُوا لَنَا خَاشِعِينَ﴾

और कुरआन करीम की यह आयत है:

﴿فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي﴾ [2:150]

अल्लाह ता'आला से दिल लगाये रखने की दलील कुरआन करीम की यह आयात है :

﴿وَأَنِيبُوا إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلِمُوا لَهُ﴾ [39:54]

अल्लाह ता'आला से सहायता माँगने की दलील बारी ए ता'आला का यह फरमान है:

﴿إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ﴾: [1:5]

और हदीस पाक में आया है के " जब भी तुम सहायता माँगना चाहो, तब अल्लाह ता'आला से ही सहायता माँगा करो" ।

अल्लाह ता'आला की शरण माँगने की दलील कुरआन करीम की यह आयत है:

﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ﴾ [114:1]

अल्लाह ता'आला से ही फ़रियाद करने की दलील का यह फरमान है:

﴿إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ﴾ [8:9]

अल्लाह ता'आला के नाम पर ज़ुबह करने की दलील कुरआन करीम की यह आयत है:

﴿قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٢﴾﴾

[6 : 162]

और सुन्नत से प्रमाण के बारे में हदीस पाक में आया है के " उस व्यक्ति पर अल्लाह ता'आला ने लानत भेजी है, जो अल्लाह ता'आला के अतिरिक्त किसी और के नाम पर ज़ुबह करता है "।

अल्लाह् ता'आला के लिए ही नज़र और नियाज़ या मन्नत की दलील अल्लाह् ता'आला का यह फरमान है:

﴿يُوفُونَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا﴾ [76:7]

दूसरा सिद्धाँत

दीन ए इस्लाम के दलाइल के साथ पह्चान प्राप्त करना

इस्लाम कहते हैं अल्लाह् ता'आला को एक प्रभु मानते हुए उसके सामने सर झुकाना, इसकी आज्ञा का पालन करते हुए आदेशों का पालन करना, और शिर्क एवं शिर्क करने वालों से अपने आप को दूर रखना ।

इस्लाम के तीन स्तर(दर्जात) है : एक इस्लाम, दूसरा ईमान, और तीसरा उपकार

(एहसान) । और इन में से हर स्तर के कई अंश है ।

इस्लाम के पाँच अंश (रुकुन) हैं: इस बात की साक्षी देना के अल्लाह ता'आला के अतिरिक्त कोई प्रभु मौजूद नहीं है और मुहम्मद सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम अल्लाह के रसूल है, नमाज़ पढ़ना, ज़कात देना, रमज़ान के रोजे रखना और हज करना ।

शहादत [अल्लाह को एक मानने की साक्षी देना] की दलील अल्लाह ता'आला का यह फरमान है:

﴿شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ وَالْمَلَائِكَةُ وَأُولُو الْعِلْمِ قَائِمًا بِالْقِسْطِ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ﴾ [3: 18]

इस आयत का अर्थ यह है के एक अल्लाह ता'आला के अतिरिक्त कोई और प्रभु नहीं है

| "لا الــ"- इसमें उन सभी देवताओं को नकारा गया है | जिनकी अल्लाह ता'आला को छोड़ कर प्रार्थना की जाती है | "الا الله" – इस में एक अल्लाह के लिए प्रार्थना को प्रमाणित किया गया है | जिसकी प्रार्थना में कोई और भागीदार नहीं है | जिस तरह इस देश और सरकार में कोई उसका साथी या भागीदार नहीं है |

इस आयत की अतिरिक्त व्याख्या अल्लाह ता'आला के इस फरमान में हो रही है :

﴿وَإِذْ قَالَ إِبْرَٰهِيمُ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِۦٓ إِنَّنِى بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُونَ ﴿٢٦﴾ إِلَّا ٱلَّذِى فَطَرَنِى فَإِنَّهُۥ سَيَهْدِينِ ﴿٢٧﴾ وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِى عَقِبِهِۦ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢٨﴾﴾

[43:26-28]

और अल्लाह ता'आला का यह फरमान है:

﴿قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَىٰ كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِّن دُونِ اللَّهِ فَإِن تَوَلَّوْا فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ﴾ [3:64]

और हज़रत मुहम्मद सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम को अल्लाह ता'आला का सच्चा रसूल मानने के साक्ष्य देने की दलील अल्लाह ता'आला का यह फरमान है:

﴿لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُم بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ﴾ [9:128]

हज़रत मुहम्मद सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम को अल्लाह ता'आला का सच्चा रसूल मानने के साक्ष्य देने का अर्थ यह है के आपने जिन चीज़ों का आदेश दिया है, उसका पालन किया जाए, आपने जिन चीज़ों से मना किया है, उन से दूर रहें, और अल्लाह

ता'आला की प्रार्थना सिर्फ उसी ढंग से की जाए, जो आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम ने बताई है ।

नमाज़ और ज़कात की दलील और एक ईश्वरवाद की व्याख्या अल्लाह ता'आला के इस फरमान में हो रही है :

﴿وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ حُنَفَاءَ وَيُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُؤْتُوا الزَّكَاةَ وَذَٰلِكَ دِينُ الْقَيِّمَةِ﴾ [98:5]

रोजे की दलील अल्लाह ता'आला का यह फरमान है :

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ﴾ : [2:183]

हज के कर्तव्य पालन की दलील अभिव्यक्त करते हुए अल्लाह ता'आला ने फ़रमाया के :

﴿وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا [3:97]
وَمَن كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ﴾

दूसरा स्तर :

ईमान (विश्वास) : इसके सत्तर से कुछ अधिक भाग हैं, इसका सबसे सर्वश्रेष्ठ भाग "لا الہ الا الله"का स्वीकार करना है, और सबसे न्यूनतम भाग मार्ग से दुखदाई चीज़ों को हटाना है और लज्जा भी ईमान का एक भाग है ।

ईमान के छः अंश हैं: अल्लाह ता'आला पर ईमान लाना, उसके फरिश्तों पर, उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर, आख़िरत के

दिन पर, अच्छी और बुरे भाग्य पर विश्वास रखना है ।

इन छः अंशों की दलील अल्लाह ता'आला का यह फरमान है :

قَالَ تَعَالَىٰ: ﴿ لَّيْسَ ٱلْبِرَّ أَن تُوَلُّوا۟ وُجُوهَكُمْ قِبَلَ ٱلْمَشْرِقِ وَٱلْمَغْرِبِ وَلَٰكِنَّ ٱلْبِرَّ مَنْ ءَامَنَ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْءَاخِرِ وَٱلْمَلَٰٓئِكَةِ وَٱلْكِتَٰبِ وَٱلنَّبِيِّـۧنَ ﴾

[2:177]

भाग्य पर ईमान रखने की दलील कुरआन करीम में अभिव्यक्त की गई है: ﴿إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ﴾ [54:49] :

तीसरा स्तर :

एहसान: इसका सिर्फ एक अंश है, और वह यह है के "आप अल्लाह ता'आला की ऐसी प्रार्थना करें, के जैसे आप अल्लाह ता'आला

को देख रहें हैं, हाँ यह बात और है के आप उसको तो देख नहीं सकते, लेकिन वह तो तुम्हें देख रहा है" ।

इसकी दलील अल्लाह ता'आला का यह फरमान है :

﴿إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوا وَّالَّذِينَ هُم مُّحْسِنُونَ﴾ [16:128]

और साथ ही अल्लाह ता'आला का यह फरमान है के :

﴿وَتَوَكَّلْ عَلَى ٱلْعَزِيزِ ٱلرَّحِيمِ ۝٢١٧ ٱلَّذِى يَرَىٰكَ حِينَ تَقُومُ ۝٢١٨ وَتَقَلُّبَكَ فِى ٱلسَّٰجِدِينَ ۝٢١٩ إِنَّهُۥ هُوَ ٱلسَّمِيعُ ٱلْعَلِيمُ ۝٢٢٠﴾ [26 : 217-220]

और अल्लाह ता'आला का यह फरमान भी है :

﴿وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُو مِنْهُ مِن قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ﴾ [10:61]

हदीस नबवी से इसकी दलील वह प्रसिद्ध हदीस ए जिब्रईल है, जिसको हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि अल्लह अन्हा ने रिवायत किया है, फरमाते हैं के " हम नबी ए पाक सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम की खिदमत में बैठे हुए थे के अचानक हमारे बीच अत्यंत सफेद कपड़ों पहने हुए, और घने काले केशोंवाला व्यक्ति प्रकट हुआ, इस व्यक्ति पर यात्रा का कोई प्रभाव नहीं था, [मतलब वह व्यक्ति की स्थिति देखने से यात्री नहीं लग रहा था], और ना हम में से कोई उस व्यक्ति को जनता था,

यह व्यक्ति नबी ए पाक सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम के निकट बैठ गया, और आपके घुटनों से अपने घुटनों मिला लिए, [अर्थात बहुत ही निकट होकर बैठ गया], और अपनी दोनों हथेलियाँ उसने आप

सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम के जाँघों पर रखी, और कहा:- अए मुहम्मद मुझे आप इस्लाम के बारे में बतायें ।

तब आपने कहा: " इस्लाम का अर्थ यह है के आप इस बात का साक्ष्य् दें के अल्लाह ता'आला के अतिरिक्त कोई और प्रभु नहीं है, और मुहम्मद सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम अल्लाह के रसूल हैं, और नियमित तौर से नमाज़ पढ़ें, ज़कात दें, रमज़ान के रोजे रखें, और अगर संपन्न एवं सक्षम हो तो हज का कर्तव्य पूरा करें " ।

उस व्यक्ति ने कहा:- आपने बिलकुल सच कहा है [सहाबा कहते हैं के] के हमे इस बात से आश्चर्य होने लगा के वह खुद प्रश्न कर रहा है, और उसकी पुष्टि भी कर रहा है । उस व्यक्ति ने कहा :- आप मुझे ईमान के बारे में बतायें।

तब आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम ने कहा : " के आप अल्लाह ता'आला पर, उसके फरिश्तों पर, उसके रसूलों पर, आख़िरत के दिन पर, और अच्छे एवं बुरे भाग्य पर ईमान रखें " । उस व्यक्ति ने कहा:- आपने बिलकुल सच कहा है ।

फिर उस व्यक्ति ने कहा :- आप मुझे एहसान के बारे में बतायें, तब आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम ने कहा : " के आप अल्लाह ता'आला की ऐसी प्रार्थना करें, के जैसे आप अल्लाह ता'आला को देख रहें हों, हाँ यह बात और है के आप उसको तो देख नहीं सकते, लेकिन वह तो तुम्हें देख रहा है "।

फिर उस व्यक्ति ने कहा : के आप मुझे खयामत के दिन के बारे में बतायें, तब आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम ने कहा : " जिस

व्यक्ति [आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम] से प्रश्न किया जा रहा है, वह प्रश्नकर्ता [हज़रत जिब्रईल] से अधिक उसके बारें में जानकारी नहीं रखता है "। फिर उस व्यक्ति ने कहा : आप मुझे खयामत के लक्षणों के बारे में बतायें, तब आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम ने कहा : " नौकरानी अपने स्वामी को जन्म देगी, और आप देखेंगे के नंगे पाँव, नग्न तन रहने वाले निर्धन एवं गरीब और बकरियाँ चराने वाले बड़े-बड़े भवनों का निर्माण करेंगे " । रिवायत हदीस कहती है के वह व्यक्ति चला गया, तो हम कुछ देर खामोश रहे, फिर आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम ने कहा :" अए उमर क्या तुम जानते हो यह प्रश्नकर्ता कौन था?" तब हमने कहा : अल्लाह और उसका रसूल बेहतर जानते हैं, तब आपने कहा :" यह जिब्रईल अमीन थे,

जो तुम्हें तुम्हरे दीन की जानकारियाँ सिखला रहे थे"।

तीसरा सिद्धाँत

हमारे नबी मुहम्मद सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम से सम्बंधित जानकारी

हमारे नबी वो मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुतल्लिब बिन हाशमी हैं । हाशम खुरैश का एक वर्ग है, और खुरैश अरब जाती है , और अरब जाती हज़रत इस्माइल बिन इब्राहिम अलैह अलन नबीना अफ़ज़लुस्सलाह व तस्लीम की संतान है ।

आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम की कुल आयु तिरसठ [63] साल थी । जिनमें से चालीस साल अपने नबूवत से पहले बिताए । और तेईस [23] साल आपने नबी और रसूल

बनकर बिताए । आपको नबूवत दी गई "إقرأ" "इक़रा" (पढ़ो! अपने प्रभु के नाम से) का आदेश देते हुए [कुरआन करीम का प्रकट हुआ पहला अध्याय] । और आपको "المدثر" के शीर्षक देते हुए रिसालत से सम्मानित किया गया । आपका शहर मक्के मुकर्रमः था ।

अल्लाह ता'जला ने आपको शिर्क से डराने और एक ईश्वरवाद की ओर बुलाने के लिए नबी बनाकर भेजा है।

इसकी दलील अल्लाह ता'आला का यह फरमान है :

﴿ يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۝١ قُمْ فَأَنذِرْ ۝٢ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۝٣ وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۝٤ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۝٥ وَلَا تَمْنُن تَسْتَكْثِرُ ۝٦ وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۝٧ ﴾
[74 : 1-7]

"قم فأنذر" – क़ुम फइनज़र – का अर्थ यह हैं के आप शिर्क से लोगों को डरायें, और एक अल्लाह की तरफ बुलाएँ ।

"و ربك فكبر" – व रब्बिका फकबर – का अर्थ यह हैं के आप एक ईश्वरवाद के मार्ग पर चलते हुए अल्लाह ता'आला की महानता का प्रचार करें ।

"و ثيابك فطهر" – व सयाबिका फत'हर – का अर्थ यह है के आप अपने कार्यों को शिरक की गंदगी से मुक्त रखें ।

"والرجز فاهجر" : - वररिज्ज़ी फ़ाहिज़र – رُجز – रुज्ज़ – कहते हैं मूर्तियों को , अर्थात मूर्तियों को और उसके मान्ने वालों से दूर कर लें और उनसे अपने आप को अलग और शुद्ध रखें ।

आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम ने एक ईश्वरवाद का निमंत्रण देते हुए अपने जीवन के पूरे दस साल गुज़ार दिए, उस के बाद आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम को मेराज का सौभाग्य मिला, जिसके दौरान आप पर पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ की गई । आपने तीन साल तक मक्के मुकर्रमः में नमाज़ें अदा कीं । फिर आपको मदीने मुनव्वरा की ओर हिजरत का आदेश दिया गया ।

हिजरत उम्मते इस्लामियः के पक्ष में एक कर्तव्य है । हिजरत कहते हैं शिर्क की पूजा करने वाले देश से इस्लामी देश की ओर स्थानांतरण होना । हिजरत का आदेश खयामत तक शेष रहने वाला है ।

इस की दलील अल्लाह ता'आला का यह फरमान है :

﴿إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّاهُمُ الْمَلاَئِكَةُ ظَالِمِي أَنفُسِهِمْ قَالُوا فِيمَ كُنتُمْ قَالُوا كُنَّا مُسْتَضْعَفِينَ فِي الْأَرْضِ قَالُوا أَلَمْ تَكُنْ أَرْضُ اللَّهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوا فِيهَا فَأُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَسَاءَتْ مَصِيرًا إِلَّا الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيعُونَ حِيلَةً وَلَا يَهْتَدُونَ سَبِيلًا فَأُولَٰئِكَ عَسَى اللَّهُ أَن يَعْفُوَ عَنْهُمْ وَكَانَ اللَّهُ عَفُوًّا غَفُورًا﴾ [4: 97- 99]

अल्लाह ता'आला का यह फरमान भी है :

﴿يَا عِبَادِيَ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ أَرْضِي وَاسِعَةٌ فَإِيَّايَ فَاعْبُدُونِ﴾ [29:56]

इमाम बग़वी रहमतुल्लाह अलैह ने कहा के : " इस आयत के नाज़िल होने का कारण मक्के

मुकर्रमः के वह मुसलमान है जिन्होंने हिजरत नहीं की थी, अल्लाह ता'आला ने इन्हे ईमान वालों के नाम से आवाज़ दी है "।

हिजरत के फ़र्ज़ होने पर अहादीस शरीफ से प्रमाणित कुछ अहादीस है: अल्लाह ता'आला के रसूल सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम ने फ़रमाया के " हिजरत का सिलसिला उस वक़्त तक अंत नहीं होता, जिस वक़्त तक तौबा का सिलसिला अंत नहीं होता है, और तौबा का सिलसिला सूर्य के पश्चिम से उगने तक अंत होने वाला नहीं है" ।

जब आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम मदीने मुनव्वरा में स्थायी रूप से आवास स्वीकार कर लिया तब आपको यहाँ इस्लामी शरीयत के अन्य आदेशों : ज़कात, रोजः, हज, अज़ान, जिहाद, अच्छी बातों का आदेश, बुरी बातों से रोकने जैसे आदेश दिए गए हैं

। आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम ने इन अह्काम की प्रचार में अपनी ज़िन्दगी के दस साल गुज़ार दिए । इस के बाद आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम इस दुनिया से रूपोश होगए । और आपका लाया हुवा दीन शेष रहा ।

यह आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम द्वारा लाया हुआ दीन है, जिसमें कोई ऐसी भलाई नहीं है, जिसकी तरफ आपने अपनी उम्मत का मार्गदर्शन ना की हो और कोई ऐसी बुराई नहीं है जिससे आप ने अपनी उम्मत को अवगत ना किया हो, और सब से बड़ी भलाई जिस की तरफ आप ने अपनी उम्मत का मार्गदर्शन किया है, वह है एक ईश्वरवाद और हर वह चीज़ जो अल्लाह ता'आला को पसंद है और जिससे अल्लाह ता'आला प्रसन्न होते है ।

और वह बुराई जिससे आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम ने अपनी उम्मत को चेतावनी दी है, वह है शिर्क, और इसके अतिरिक्त हर वह चीज़ जो अल्लाह ता'आला को पसंद नहीं है और जिसको अल्लाह ता'आला स्वीकार नहीं करते हैं।

अल्लाह ता'आला ने आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम को प्रति व्यक्ति के लिए रसूल बना कर भेजा है । और आपकी आज्ञाकारिता को सारे मनुष्यों और जिन्नात पर फ़र्ज़ किया है । **इसकी दलील अल्लाह ता'आला का यह फरमान है:**

﴿قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا﴾ [7:158]

अल्लाह ता'आला ने आपके माध्यम से अपने दीन को सही और पूरा किया है , और

इसकी **दलील** कुरआन करीम की यह आयत है :

[5:3] ﴿الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا﴾

और **आप सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम के इस दुनिया से पर्दापोश फार्मा जाने की दलील** कुरआन करीम की यह आयत है :

[39 : 30-31] ﴿إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُم مَّيِّتُونَ ۝٣٠ ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِندَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ ۝٣١﴾

सारे मनुष्य जब मृत हो जाते हैं, तो दोबारा इन्हे ज़िंदा उठाया जायेगा, जिसकी दलील कुरआन करीम की यह आयत है :

[20:55] ﴿مِنْهَا خَلَقْنَاكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَىٰ﴾]

और कुरआन करीम की यह आयत है:

﴿وَاللَّهُ أَنبَتَكُم مِّنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا﴾
[71 : 17-18]

और सारे मनुष्यों को दोबारा उठाये जाने के बाद उनसे हिसाब लिया जायेगा । और उनको उनके कार्यों के अनुसार प्रतिफल दिया जायेगा ।

इसकी दलील अल्लाह ता'आला का यह फरमान है :

﴿وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ أَسَاءُوا بِمَا عَمِلُوا وَيَجْزِيَ الَّذِينَ أَحْسَنُوا بِالْحُسْنَى﴾ [53:31]

और जो व्यकति मृत्यु के बाद दोबारा उठाये जानेको अस्वीकार करे ,तो वह काफ़िर है, **इसकी कुरआन करीम में यह आयत है :**

[64 : 7] ﴿زَعَمَ ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓاْ أَن لَّن يُبۡعَثُواْۚ قُلۡ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبۡعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلۡتُمۡۚ وَذَٰلِكَ عَلَى ٱللَّهِ يَسِيرٞ ٧﴾

अल्लाह ता'आला ने सभी रसूलों को अच्छाइयों की बशारत देने वाले और बुराईयों से डराने वाले बनाकर भेजा ,जिसकी दलील अल्लाह ता'आला का यह फरमान है:

[4:165] ﴿رُّسُلًا مُّبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى اللَّهِ حُجَّةٌ بَعْدَ الرُّسُلِ﴾

इन रसूलों में सबसे पहले रसूल हज़रत नूह अलैहिस्सलाम है, और सबसे आखरी रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम हैं, जो खातिमुन्न नबी है, **हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के सबसे पहले रसूल होने की दलील** कुरआन करीम की यह आयत ए करीम है :

﴿إِنَّا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَى نُوحٍ وَالنَّبِيِّينَ مِنْ بَعْدِهِ﴾ [4:163]

हर वह जाती जिसके पास अल्लाह ता'आला ने हज़रत नूह अलैहिस्सलाम से लेकर हज़रत मुहम्मद सल्ललाहु अलैहिवसल्लिम तक रसूलों को भेजा है,इन सब रसूलों ने अपनी अपनी जातियों या वर्गों को एक अल्लाह की प्रार्थना करने का आदेश दिया है, और शैतानों की प्रार्थना से इन्हे रोका, **इसकी दलील** अल्लाह ता'आला का यह फरमान है :

﴿وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ﴾ [16:36]

अल्लाह ता'आला ने अपने सभी भक्तों पर यह फ़र्ज़ निर्णीत किया है के वह ताग़ूत की पूजा से इंकार करें

और अल्लाह ता'आला पर ईमान रखें , अल्लामा इब्ने खय्युम रहमतुल्लाह अलैह ने कहा है के : "तागूत का अर्थ हर वह चीज़ है जिसमें भक्त अपने प्रभु या प्रशंसक या स्वामी से सम्बंधित अपनी सीमायें पार कर दे" ।

झूठे देवतायें बहुत सी चीज़ें हैं, जिनमें सबसे स्पष्ट पाँच है: पहला शापित शैतान [अल्लाह का इसपर अभिशाप हो],दूसरा वह व्यक्ति

जिसकी प्रार्थना की जा रही हैं और वह उससे प्रसन्न हैं, तीसरा वह व्यक्ति जो लोगों को अपनी प्रार्थना की ओर बुलाये, चौथा वह व्यक्ति जो अनदेखी चीज़ों में से किसी चीज़ का इल्म रखने का दावा करे और पाँचवाँ वह व्यक्ति जो अल्लाह ता'आला की प्रकट किये हुए आदेशों से अधिक कोई चीज़ का आदेश दे ।

इसकी दलील अल्लाह ता'आला का यह फरमान है:

﴿لَا إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ قَد تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ فَمَن يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِن بِاللَّهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ لَا انفِصَامَ لَهَا وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ﴾ [2:256]

और कलमे तौहीद - ला इलाहा इल्लल्लाह (अल्लाह के अतिरिक्त कोई प्रभु नहीं है) का यही अर्थ है ।

और हदीस पाक में आया है के :" मूल चीज़ इस्लाम है और इसका स्तंभ नमाज़ है , और इस्लाम के ऊंचाई का सर्वश्रेष्ठ कार्य अल्लाह ता'आला के मार्ग में जिहाद करना है "

अल्लाह सबसे अधिक एवं श्रेष्ठतर जानने वाला है ।

यह कुल तीन सिद्धाँत निष्कर्ष को पहुंचे ।